स्वराजबीर/ अदालतों पर ताला लगा दिया जाए

जज साहिब
मेहरबान जज साहिब
महावीर नरवाल मर गया है
हाँ, जज साहिब
नताशा का पिता
इस जग में नहीं रहा
मेहरबान जज साहिब
वह धी धियाणी
कुछ दिन पहले
आपके दरबार में आई थी
उस ने यह नहीं था कहा
कि मेरे ऊपर मुकदमा न चलाओ
उस ने यह नहीं कहा था
कि मुझे दोष मुक्त कर दो
उस के वकील ने बिनती की थी
कि उसे दे दो दो पल
उस ने अपने पिता का मुख देखना है
उस के साथ दो बातें करनी हैं
वो बीमार है
वह तेरह बरस की थी
जब उस की माँ गुजर गई
उसका पिता ही उस की माँ थी
गहरी छाया था वो
आप जानते हैं जज साहिब
आप को बहुत अच्छी तरह से पता है
इस लड़की ने
दिल्ली के दंगे नहीं थे करवाए
वो निर्दोष है
वो समाज के पिंजरे तोड़ना चाहती थी
आप ने उसे ताकत के पिंजरे में कैद
कर दिया
आप बहुत ताकतवर हैं, जज साहिब
आप मुनसिफ हैं
आप उसे
वह दो पल दे सकते थे
कि वो अपने पिता का मुख देख
सकती
आप उसे और कैद में रख सकते हैं
जज साहिब
आप उसे उम्र कैद की सजा दे सकते
हैं
आपके पास ताकत है, जज साहिब
आप इंसाफ कर सकते हो
ऊपर लिखा गलत है
आप सब कुछ कर सकते हो जज
साहिब
परंतु आप
उसे अपने पिता संग बातें करने के
लिए
दो पल नहीं दे सकते
आप वह दो पल नहीं दे सकते जज
साहिब
आप के पास
वह दो पल देने वाला दिल नहीं है,
जज साहिब
आप के पास ताकत है
आप के पास इंसाफ है
आप का दिल साफ-शफाफ है
आप ने कहा था
आप उसकी ?रियाद
सोमवार को सुनोगे
जज साहिब
वो सोमवार अब नहीं आयेगा
वो सोमवार
अब कैलंडर से गायब हो गया है
जज साहिब
आप सारी उम्र
इस सोमवार की तलाश करते रहोगे।

सुनो प्रजाजन, निर्दोष हैं राजन

सुनो प्रजाजन,
राजन अवगत हैं कि
आर्यावर्त में मृत्यु का हाहाकार मचा है
किंतु निर्दोष हैं राजन..
हां पूर्णत: निर्दोष हैं राजन
क्योंकि उनके सतखंडा राजप्रासाद
के निर्माण में एक भी श्रमिक की मृत्यु नहीं हुई
और निष्कलंक भी हैं राजन
उनके सहस्त्रों राजसी वस्त्रों पर
रक्त का एक भी कण नहीं है
इसलिये सामूहिक हत्या के किसी भी आरोप
से बरी हैं राजन
निरन्तर आकाश विहार में निमग्न रहे राजन
वायु मार्ग में मनुष्य तो दूर पक्षी तक चोटिल नहीं हुआ
तब धरती पर प्राण वायु के अभाव में मरते लोगों के
लिये किंचित दोषी नहीं हैं राजन
राजपत्र में आज तक दर्ज नहीं है
एक भी ऐसी मृत्यु
जो राजन की कर्णप्रिय 'मन की बात' से हुई हो
एक भी संभाषण नहीं बना किसी की मृत्यु का कारण
सो राजन निर्दोष ही हैं
दोषी हैं प्रजाजन
मोक्ष की कामना में मृत्यु का स्वयं वरण कर रही है प्रजा
ऐसी प्रजा को नहीं है अधिकार विलाप करने का भी
भगीरथी से बेतवा तक तैरते शव मात्र शव नहीं हैं
राजाज्ञा के पालन में मृत्यु का महोत्सव मनाते
प्रजाजनों का जल-विहार ,जल-क्रीडा है
राजन का आदेश है कि
कोषालय से लेकर चिकित्सालय तक
प्रजाजन सदैव पंक्ति सीधी ही रखें
इसलिये श्मशान और कब्रिस्तान में
पूरे अनुशासन में अपनी बारी की प्रतीक्षा
करते हैं श्वेत वस्त्र में लिपटे क्रमबद्ध शव
तो सुनो प्रजाजन,
राजन 'लोक कल्याण' में विराज कर
चारणों, सभासदों के साथ किसी नए उत्सव,महोत्सव
पर विचार कर रहे हैं
कोलाहल न करें, शांति बनाए रखें
कृपया नवीन उद्घोषणा की प्रतीक्षा कीजिये
आप कतार में हैं।

-डॉ राकेश पाठक

चाकू

विष्णु नागर

तुम्हारे घर में यह चाकू क्यों है? कहाँ से आया?

फल -सब्जी वगैरह काटने के लिए लाए हैं और मैं ही बाजार से खरीद कर लाया था।आपके यहाँ भी ऐसा चाकू होगा।

जितना पूछा जाए,उतना जवाब दो। क्या तुम फल- सब्जी बिना काटे नहीं खा सकते?

नहीं खा सकते।

जब चाकू नहीं होता था,तब तो खाते रहे होंगे?

मैंने बचपन से ही अपने घर में ऐसा चाकू देखा है।मेरे माँ- बाप से तो कभी किसी ने नहीं पूछा कि तुम्हारे घर में यह या वह चाकू क्यों है? कभी दूसरों को जरूरत पड़ जाती थी तो हम दे देते थे। हमें उनके चाकू की जरूरत पड़ जाती थी तो हम उनसे माँगकर ले आते थे। कभी किसी को किसी के यहाँ चाकू होने से दिक्कत नहीं हुई। जब चाकू नहीं होता होगा,तब नहीं होता होगा। मुझे नहीं मालूम कि कब नहीं होता था और तब लोग क्या करते थे।

तुम्हारे बाप- दादा के बाप -दादा के बाप- दादा के समय तो नहीं होता होगा।

तब शायद आपके पूर्वजों के यहाँ भी नहीं होता होगा।

फिर बकवास !इन्क्वायरी मैं तुम्हारी करने आया हूँ या तुम मेरी ?जवाब दो कि जब वे बिना चाकू के फल-सब्जी खा सकते थे, तो तुम क्यों नहीं खा सकते?

हम नहीं खा सकते ।

क्यों नहीं खा सकते,मैं यही पूछ रहा

हूँ?

बस कहा न,नहीं खा सकते।

उनसे पूछा कभी कि वे तब कैसे खाते थे? तुम भी उसी प्रकार खाओ।

जब ऊपर जाऊँगा तो पूछ लूँगा और फिर आकर आपको जवाब दे दूँगा।

पक्का है ?आकर जवाब दोगे?

हाँ एकदम पक्का है। 101 प्रतिशत।

तो अभी पूछ लो। देर क्यों करते हो।

क्या, अभी से ऊपर चला जाऊँ?

हाँ-हाँ चले जाओ मगर जवाब देने वापस आना होगा।

और मान लो,नहीं आ सका तो? उन्होंने नहीं आने दिया तो?

अरे पहले जाकर तो देखो।आने की कोशिश करना।नहीं आ सके तो तुम्हारी गुमशुदगी की रिपोर्ट डाल देंगे।

मगर जाऊँ कैसे?

कैसे-जाना है,यह तुम तय करो।इसका पूरा अधिकार कानून तुम्हें देता है।

इतना अधिकार मुझे है?

हाँ आज तक तो है।कल की नहीं कह सकता ।अगर आज गये और कोई आपत्ति आई तो मैं संभाल लूँगा।बेफिक्र होकर जाओ।

तो क्या करूँ, आत्महत्या कर लूँ?

मैंने कहा न, यह मुझसे मत पूछो।यह तुम्हारा निर्णय है मगर एक बात सोच लो कि बच गए तो सजा होगी। यह मत कहना कि मैंने तुम्हें आत्महत्या के लिए प्रेरित किया था।वैसे यह भी कहते हैं कि आत्महत्या कायरता होती है।

मैं कायर ही तो हूँ कि हर घर में पाए जाने वाले चाकू पर आपने मुझ पर इतने सारे फालतू सवाल दागे और मैं जवाब देता रहा।

अगर तुम कायर हो तो हमें कोई प्राब्लम नहीं मगर कायर ही बने रहना होगा वरना तुम्हारा यह चाकू तुम्हारे खिलाफ काम आएगा।इसे हम जब्त कर रहे हैं और खबरदार जो दूसरा चाकू खरीद कर घर में रखा तो !हमें सब खबर रहती है।हमारी सरकार फल और सब्जी के खिलाफ चाकू से की गई हिंसा को बर्दाश्त नहीं कर सकती।आज से नागरिकों को बिना चाकू के जीना सीखना होगा। बंदूक -पिस्तौल की बात अलग है।इनको आज से लाइसेंस मुक्त कर दिया गया है। तुम चाहो तो बंदूक -पिस्तौल से फल- सब्जी काटना सीख सकते हो।सीखने पर आज तक कोई पाबंदी नहीं है।कल की उसकी भी कोई गारंटी नहीं।

हर मौत कोरोना नहीं, उनका मुनाफ़ा है

अजय असुर

हममें से अधिकांश परिवार महामारी की चपेट में हैं, विशेषकर शहर। फेसबुक, ट्वीटर, वाट्सऐप अपनों की मौत की सूचनाओं से पटा है। लेकिन मौत की सूचनाओं के बीच यह जानकारी नहीं मिल रही कि मृतक को क्या हुआ था? क्या कोविड रिपोर्ट पॉज़ीटिव आई थी? लक्षण क्या थे? दवाएं कौन सी चलीं?

यह कह देना पर्याप्त नहीं है कि कोरोना ने हमारे प्रियजन को छीन लिया.....

मेरे एक परिजन की मौत हुई। उन्होंने सर्दी-जुकाम होने पर टेस्ट करवाया था। उन्हें कुछ दवाएं दी गईं, जिसमें मलेरिया की दवा ।ष्टक्त शामिल थी। दो दिन तक तबियत सुधरती रही। तीसरे दिन अचानक हृदय की धड़कन बढ़ गई। उन्होंने सिर्फ हृदय की धड़कन बढ़ने की शिकायत की, लेकिन परिवार वालों ने खुद मान लिया कि उन्हें सांस लेने में भी दिक्कत आ रही है। दरअसल, हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाए तो सांस रूकती सी लगना, घबराहट, बैचनी स्वभाविक है, जो भय के इस वातावरण में बहुत बढ़ जाती है।

वे अस्पताल नहीं जाना चाहते थे, लेकिन उन्हें पैरवी करके एक सरकारी अस्पताल में एडमिट करवाया गया, जहां उन्हें ऑक्सीजन लगाया गया। अस्पताल में कौन-कौन सी दवाएं दी गईं, वे इस बारे नहीं बता पाए। परिवार वाले बताते हैं कि जब तक ऑक्सीजन लगी रही, उनकी हालत सुधरती रही। उनका कहना है अस्पताल वाले बीच-बीच में ऑक्सीजन हटा दे रहे थे। क्योंकि वे ऑक्सीजन बचाना चाहते थे। अंततः वे मर गए।

मेरे एक और जानने वाले की अभी दो दिन पहले मौत हो गयी। कोई भी कोविड टेस्ट नहीं ना ही सर्दी, खांसी, बुखार, जुखाम बस सांस फूलने की समस्या। आक्सीजन लेबल 40 और ऑक्सीजन देने पर भी राहत नहीं होने पर लोहिया अस्पताल में भर्ती के बावजूद भी जीवन के संघर्ष से हार गए। और कोविड में मौत की गिनती में एक और इजाफा। जिसने भी सुना उसके जुबान पर एक ही कारण कोरोना से मौत हो गयी। इससे ज्यादा जानने की कोशिश तक नहीं कि और कोई दिक्कत तो नहीं थी। वास्तव में फेफड़े में इन्फेक्शन की दिक्कत पहले से थी। पर कोरोना के आगे सब कुछ पीछे रह गया और आखिर में कोरोना बाजी मार ले गया।

मेरे एक पड़ोसी महिला की अभी कुछ दिन पहले हार्ट अटैक से मृत्यु हो गयी। पर पूरे मोहल्ले में डर का दहशत कि कोरोना ने निगल लिया और किसी की भी हिम्मत नहीं हुई घर पर जाकर पता कर लें कि वास्तविक मौत का क्या कारण हैं और इसी तरह से मेरे एक मित्र की हार्ट अटैक होने पर अस्पताल ले गए उनके परिवारजन, पर अस्पताल में उनकी मौत हो गयी। अस्पताल प्रशासन ने इनकी मौत को भी कोरोना के खाते में डाल दिया।

ऐसे में कई लोगों की मौत इसी तरह हुई है। वास्तविक कारण कुछ और है पर हमारे मन में एक ही कारण कोरोना। ऐसे में आप अपने आसपड़ोस में देंखे और नजदीक से पता करें तो आपको भी मौतों का रहस्य पता चल जायगा। इस वक्त कोरोना को छोड़कर और किसी भी बीमारी में कोई भी मौत नहीं हो रही है। भारत में कोई भी बीमारी नहीं बची है। बस एक ही बीमारी है कोरोना। कैंसर, हार्ट, डेंगू, टीबी, बीपी आदि बीमारी से कोई भी मौते नहीं। सब भारत से जा चुकी हैं। यदि कुछ है तो बस कोविड 19 यानी कोरोना।

प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया में इस वक्त कोरोना से हुई मौतों का मंजर चारों तरफ तैर रहा है हमारे अंदर डर का माहौल इतना ज्यादा भर दिया गया है कि यदि हमारे परिवार में किसी की भी मौत हो जाती है तो हम उसके किनारे भी नहीं जाते!

अभी दो दिन पहले उत्तर प्रदेश के मऊ जिलेनके घोसी क्षेत्र में एक की मौत हो गयी और परिवार में कोरोना से इतनी दहशत कि लाश के किनारे कोई नहीं आया और एक बल्ली से के ढकेल कर जेसीबी में डाला गया और जिस तरह कूड़ा गड्ढे में डाला जाता है उसी तरह उस लाश को भी डालकर उस पर मिट्टी डाल दी गई। इस तरह तो किसी भी जानवर के साथ भी ऐसा कोई नहीं करता। पर इस सिस्टम ने इतना खौफ पैदा कर दिया कि यदि हमें बुखार जुखाम हो जाए तो कोरोना दहशत के मारे हम वैसे ही आधे मर जाते हैं उसके बाद ये अनावश्यक दवाएं जो प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से शार्टेज दिखाकर मांग बढ़ाई जा रही है और उन्ही दवाओं को सेवन कर मौतें हो रहीं हैं।

इन दवाओं को जिसे कुछ डाक्टर ही जानते थे आज आम आदमी भी इन दवाओं का नाम जान गया है प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से....

और पूंजीपतियों के साथ मिलकर सरकार के साथ-साथ जनता भी जिसको भी मौका मिल रहा है वो इस आपदा में भी अवसर बना रहा है। ये शासक वर्ग अपनी लूट में मेहनतकश जनता को भी शामिल कर रही है जिसके लिए जितनी दिक्कत है नहीं, उससे कंही ज्यादा बढ़ा चढ़ाकर इस आपदा को बड़ी आपदा बनाने की तैयारी कर रहें हैं। और जितना यह आपदा भयंकर रूप लेती जाएगी उतना मुनाफा बनाना आसान होगा।

जितनी बड़ी संख्या में मौतें हो रही हैं, उसे देखते हुए अब सिर्फ श्रद्धांजलि देने या दुःख व्यक्त करने का समय नहीं गया है। हम सब के आंसू सूख चुके हैं। संख्या इतनी बढ़ चुकी है कि परिचतों की मौत की खबरों के नीचे टिप्पणी लिखने का भी मन नहीं करता।

जरूरत इस बात की है कि हम देखने की कोशिश करें कि मौत का मुख्य कारण क्या है?

अगर आपने अपनों को खोया है तो आग्रह है कि कृपया उनके रोग, टेस्ट, मृत्यु से पहले हुए इलाज के बारे में भी विस्तार से लिखें, ताकि हम सब यह समझ सकें कि वास्तव में हो क्या रहा है? यह बचाव में भी सहायक होगा। ये सूचनाएं बहुत बड़े पैमाने पर आनी चाहिए।